इस्लाम धर्म
के
तीन मूलाधार

लेखक :

मुहम्मद बिन सुलैमान अल-तमीमी रहेमहुल्लाह

अनुवादक :

सैय्यद ज़ाहिद अली

संशोधन कर्ता :

मुहम्मद ताहिर मुहम्मद हनीफ

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالبطحاء، ١٤٢٠هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر
محمد بن عبدالوهاب بن سليمان
الأصول الثلاثة/ ترجمة سيد زاهد علي. - الرياض.
٣٦ ص ؛ ١٢ X ١٧ سم
ردمك: ٢-٥٤-٧٩٨-٩٩٦٠
النص باللغة الهندية
١- العقيدة الإسلامية ٢- التوحيد
أ- علي، سيد زاهر (مترجم). ب- العنوان
ديوي ١٤٠ ٢٠/١٠٥٧

رقم الإيداع: ٢٠/١٠٥٧
ردمك: ٢-٥٤-٧٩٨-٩٩٦٠

COOPERATIVE OFFICE FOR CALL AND GUIDANCE IN AL- BATHA

UNDER THE SUPERVISION OF
MINISTRY OF ISLAMIC AFFAIRS,
ENDOWMENTS, PROPAGATION AND GUIDANCE

PO. BOX:20824 RIYADH.11465
00966-1 — 4030251 — 4034517 — 4031587 — 4030142
FAX — 4059387
Lecture hall. Tel + Fax: 00966- 1- 4083405

WWW. COCG. ORG

© All rights reserved for the Office
No part of this book may be used for publication without the written permission of the copyright holder, application for which should be addressed to the office

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त करूणामय और दयावान है।

आप को मालूम हो (अल्लाह की दयालुता आप पर हो) कि हमें इन चार आधार को अवश्य समझना चाहिए: -

१- ज्ञान जिसको अल्लाह की मान्यता हो, नबियों की मान्यता हो, और इस्लाम धर्म की मान्यता प्राप्त हो, कुरआन और हदीस द्वारा प्राप्त प्रमाणित किया गया हो।

२- कर्म उपरोक्त ज्ञान के आधार पर।

३- इस ज्ञान को प्रचालित करना।

४- इस कार्य के लिए कठिनाईयों की स्थिति में सहनशील रहना।

इसका प्रमाण कुरआन में इस प्रकार है :-

"समय की सौगन्ध, मनुष्य वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये, अच्छे कर्म करते रहे, और एक दूसरे को हक़ की नसीहत करते एवं संयम की मंत्रणा देते रहे।" १०३:१-३

इमाम शाफअइ का कथन है, "यदि अल्लाह इस सूरा: के अतिरिक्त कोई भी सूरा: अपने बन्दों के लिए

अवतरित (नाज़िल) न करता तो यही सूरा: उन लागों के लिए काफी थी।``

स्वर्गीय ईमाम बुख़ारी का कथन है, "बोलने और कर्म से पहले ज्ञान `` (अध्याय)।

और इसके समर्थन में कुरआन करीम में अल्लाह तआला फरमाता है :

"भली - भाँति जान लो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना - पात्र नही है, और क्षमा माँगो अपने दोष के लिए भी।`` (४७:१९) अत: ज्ञान पहले आया, फिर कथन और कर्म।

जान लो अल्लाह की रहमत तुम पर हो, इसलिए के सभी मुस्लिम मर्द - औरत मर दायित्व है कि इन तीन नियमों को समझे और उन्ही के अनुसार कार्य करें।

(**प्रथम**) अल्लाह ने हमको पैदा किया, हमको भरण पोषण के साधन दिये, और हमें बिना किसी मार्गदर्शन के नही छोड़ा। उसने (अल्लाह) ने अपने रसूल हम तक भेजे। इसलिए जिसने भी उन रसूलों के उपदेशों को माना स्वर्ग में गया, और जिसने न माना वह नरक में गया।

इसके लिए के अल्लाह तआला का कथन प्रमाण

स्वरुप कुरआन करीम में है , -

" तुम लोगों के पास हमने उसी प्रकार एक रसूल तुम पर गवाह बना कर भेजा है , जिस प्रकार हमने फिरऔन की ओर एक रसूल भेजा था , फिर देख लो जब फिरऔन ने उस रसूल की बात न मानी तो हमने उसको बड़ी सख्ती के साथ पकड़ लिया। (७३:१५ - १६)

(**दूसरा**) अल्लाह कभी अपने साथ किसी को भी साझी बनाना स्वीकार नहीं करता , चाहे वह प्रशंसनीय फरिश्ता हो या विश्वसनीय रसूल ही क्यों न हो।

और प्रमाणस्वरूप अल्लाह का आदेश कुरआन में है :

" और यह मस्जिदें अल्लाह के लिए है , अतः उनमें अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।" (७२ : १८)

(**तीसरा**) जो कोई भी रसूलों का आज्ञाकारी हो , और अल्लाह के एक होने को स्वीकार करे , उसको नहीं चाहिए कि उन लोगों से कोई सम्बन्ध रखे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलों को नकारा , चाहे

वे उनके निकटतम सम्बन्धी ही क्यों न हों।

इसके प्रमाण में अल्लाह तआला फरमाता है :

तुम कभी न पाओगे कि जो लोग अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखने वाले हैं, वे उन लोगों से प्रेम करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया है , चाहे वे उनके बाप या उनके बेटे , या उनके भाई , या उनके घराने वाले हों। ये वे लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान अंकित कर दिया है और अपनी ओर से एक आत्मा प्रदान करके उनको शक्ति दी है। वह उनको ऐसी जन्नतों में प्रवेश करायेगा , जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे अल्लाह से रोज़ी हुए । वे अल्लाह की पार्टी के लोग हैं। सावधान। अल्लाह की पार्टी वाले ही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।`` (५८:२२)

आप को यह भी जानना चाहिए। अल्लाह आपको अपना आज्ञाकारी बनाऐ अल-हनीफीय: अथवा इब्राहीम का धर्म यह है कि आपको केवल एक अकेले अल्लाह की उपासना शुद्ध धार्मिक भक्ति से करनी है। यही है , जिसका अल्लाह ने सभी व्यक्तियों को आदेश

दिया है , और अवश्य ही उसने उनको इसीलिए पैदा किया।

अल्लाह तआला फरमाता है :
" मैंने जिन्नों और मनुष्यों को इसके सिवा किसी काम के लिए पैदा नहीं किया है कि वे मेरी इबादत (उपासना) करें।" (५१:५६)

अल्लाह की इबादत का सबसे बड़ा नियम यह है कि वह अकेला - मात्र है। अनेकेश्वरवाद जिसका अर्थ है कि उसके साथ किसी अन्य को साझी बनाना , जो सख़्ती से मना है।

और प्रमाण के लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है :
" और तुम सब अल्लाह की इबादत करो , उसके साथ किसी को साझी न बनाओ।" (४ : ३६)

तीन मूलाधार

अगर आपसे इस्लाम के तीन मूलाधार के बारे में पूछा जाए , जो कि सभी मुसलमान को अवश्य मालूम होना चाहिए तो आप का जवाब होना चाहिए " एक भक्त को उसका प्रभु , उसका धर्म और उसके रसूल

मोहम्मद (स०अ०व०) मालूम होना चाहिए ``

प्रथम मूलाधार :

अल्लाह के विषय में ज्ञान :- अगर आपसे पूछा जाए ," तुम्हारा प्रभु कौन है ?`` तब कहिए , "मेरा प्रभु अल्लाह है जो सारे विश्व का पालनहार है , वही पालनहार मेरा भगवान है , और मैं जानता हूँ कि उसके अतिरिक्त कोई भगवान नहीं ।``

प्रमाण के लिए अल्लाह तआला कुरआन में फरमाते है :

" प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है , जो अखिल जगत का प्रभु है। `` (१:१)

अल्लाह के अतिरिक्त हर चीज़ उसकी बनायी हुई है और मैं उसकी सृष्टि का भाग हूँ।

अगर यह आपसे पूछा जाये , " आपने अपने प्रभु के बारे में कैसे जाना ? `` तब कहिए ,"उसकी निशानियों और सृष्टि में से दिन - रात , सूर्य - चाँद , स्वर्ग , पृथ्वी , और जो कुछ भी , और जहाँ कहीं भी उन पर है और उनसे परे है। उनके द्वारा।

और सत्यता के लिए अल्लाह तआला का कथन है :

"अल्लाह की निशानियों में से ये रात और दिन, सूर्य और चन्द्रमा हैं। सूर्य और चन्द्रमा को सजदे मत करो, बल्कि उस अल्लाह को सजदे करो, जिसने उन्हें पैदा किया है, अगर वास्तव में तुम उसकी उपासना करने वाले हो।" (४१:३७) और भी उसका कहना है:

"वास्तव में तुम्हारा प्रभु अल्लाह ही है, जिसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया, फिर वह अपने राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। जो रात को दिन पर ढाँक देता है और फिर दिन, रात के पीछे दौड़ा चला आता है। जिसने सूर्य, चन्द्रमा और तारे पैदा किये। अत्यन्त बरकत वाला है, अल्लाह सारे संसार का मालिक और पालनहार है।" (७:५४)

और जो मालिक व पालनहार है उपासना योग्य है, उसके प्रमाण में अल्लाह तआला फरमाता है:

"ऐ लोगो! इबादत करो, अपने उस प्रभुवर (रब) की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुए हैं, उन सब का पैदा करने वाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसीप्रकार हो सकती है। वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती का बिछौना बिछाया, आकाश की छत

बनायी , ऊपर से पानी बरसाया और उसके द्वारा हरप्रकार की पैदावार निकालकर तुम्हारे लिए रोजी जुटायी। अतः तुम जब यह जानते हो , तो दूसरों को अल्लाह का प्रतिद्वन्दी न ठहराओ। `` (२:२१-२२)

स्वर्गीय इब्ने कसीर का कहना है,'' इस प्रकार की चीज़ों का बनाने वाला ही उपासना का अधिकारी है।``

अल्लाह के द्वारा कुछ प्रकार की इबादतें निर्देशित हैं जैसे कि अल्लाह के समक्ष पूर्णरूप से अपने आप को समर्पित करना (इस्लाम) , विश्वास (ईमान) , परोपकार (एहसान) , विनती (दुआ) , डर (खौफ़) , आशा (रजाअ) , भरोसा (तव्वक्कल) ,इच्छा (रग़बः) , भय (रहबः) , उपासना (इबादत) , बोध (खशियः) , पलटना (इनाबः) , प्रार्थना (इस्तेआनाः) , शरण की विनती (इस्तेआज़ः) , सहायता ही विनती (इस्तेग़ासः) , बलि (ज़ब्हः) और प्रतिज्ञा (नज़र)।

इसीप्रकार की दूसरे भी उपासना के निर्देश अल्लाह ने दिये है , वे सबके सब उसी के लिए है, प्रशंसनीय है उसका नाम। इसकी प्रमाणिकता के लिए अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाते हैं :

" और यह मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं, अतः उनमें अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।" (७२:१८)

अर्थात, यदि कोई व्यक्ति इनमें से कोई भी अधिकार जो अल्लाह के लिए विशेष है, किसी दूसरे से सम्बन्धित अथवा सम्बोधित करता है, तो वह अविश्वासी और बहुदेव विश्वासी है। और उसको साबित करने के लिए अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है :

" और जो कोई अल्लाह के साथ किसी और को पुकारे जिसके लिए उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो उसका हिसाब उसके प्रभु के पास है। ऐसे न मानने वाले कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते।" (२३:११७)

प्रार्थना (दुआ) :

हदीस है " प्रार्थना उपासना का मूल्य है।" प्रमाण स्वरूप अल्लाह तआला फरमाता है :

तुम्हारा प्रभु कहता है, " मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार करूँगा, जो लोग घमण्ड में आकर मेरी इबादत से मुँह मोड़ते हैं, अवश्य ही वे अपमानित होकर नरक में प्रवेश करेंगे।" (४०:६०)

डर (ख़ौफ) :

ख़ौफ (भय या डर) के प्रमाण के लिए अल्लाह तआला फरमाता है : "तुम लोगों से न डरना, मुझसे डरना, अगर तुम वास्तव में ईमान वाले हो।" (३:१७५)

आशा (रजआ) :

आशा के लिए अल्लाह तआला के कथन से प्रमाण है :

" जो कोई भी अपने प्रभु से मिलने की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और इबादत में अपने प्रभु के साथ किसी और को सम्मिलित न करे।" (१८:११०)

भरोसा (तव्वक्कल) :

भरोसे के लिए अल्लाह तआला का कथन है। प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत है :

"अल्लाह पर भरोसा रखो। अगर तुम ईमान वाले हो।" (५:२३) और यह भी कहना है : "जो अल्लाह पर भरोसा करेगा उसके लिए वही काफी है।" (६५:३)

इच्छा , भय और उपासना :

चाहत, भय और उपासना के लिए अल्लाह तआला फरमाता है :

"ये लोग भले कामों में दौड़-धूप करते थे और हमें चाहत और भय के साथ पुकारते थे, और हमारे आगे झुके हुए थे।" (२१:९०)

डरना (ख़ाशियः) :

अल्लाह तआला के द्वारा कुरआन करीम में ख़शियः (डरना) का प्रमाण इस प्रकार है :

"तो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो, और इसलिए कि मेरी नेअमत तुम पर पूरी हो और तुम कल्याण का मार्ग पाओ।" (२:१५०)

पलटना (इनाबः)

इनाबः (पलटना) किस प्रकार का हो उसके लिए अल्लाह तआला का कथन प्रमाण स्वरूप है :

"पलट आओ प्रभु कि ओर और आज्ञाकारी बन जाओ उसके पहले कि तुम पर यातना आए और फिर कही से तुम्हें सहायता न मिल सके।" (३९:५४)

प्रार्थना (इस्तेआन) :

अल्लाह तआला का कथन प्रार्थना के लिए है , "

हम तेरी इबादत करते है और तुझी से मदद माँगते हैं। `` (१:५)

और हदीस है, " अगर कुछ भी माँगना है, तो अल्लाह से ही माँगो। ``

शरण की विनती (इस्तेआज़) :

शरण के लिए अल्लाह तआला का कथन प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत है :

" कहो, मैं पनाह (शरण) माँगता हूँ लोगों के पालनकर्ता प्रभु, लोगों के मालिक की। `` (११४:१-२)

सहायता की विनती (इस्तेग़ासः) :

सहायता की विनती अल्लाह तआला ने किस प्रकार सुनी उसका प्रमाण इस प्रकार है, " जब तुम अपने प्रभु से फरियाद कर रहे थे, उत्तर में उसने कहा में तुम्हारी सहायता के लिए एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा हूँ। `` (८:९)

बलिदान (ज़िब्ह):

बलिदान के लिए अल्लाह तआला का प्रमाणित कथन है, " कहो मेरी नमाज़, मेरी समस्त भक्ति सम्बन्धी कृत्य, मेरा जीना, और मेरा मरना सब कुछ

सारे संसार के प्रभु के लिए है। जिसका कोई साझीदार नही, और इसी का मुझे आदेश दिया गया है, और सबसे पहले मैं आज्ञाकारी होने वाला हूँ।`` (६:१६३-१६४)

और हदीस में है, "अल्लाह का शाप हो उन पर जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए बलि देते हैं।``

नज़र (प्रतिज्ञा) :

नज़र के विषय में अल्लाह तआला का कथन है, "ये वे लोग होंगे जो (दुनियाँ में) अपनी प्रतिज्ञा (नज़र) पूरी करते हैं, और उस दिन से डरते है जिसकी विपत्ति हर तरफ फैली हुई होगी।`` (७६-७)

द्वितीय मूलाधार

प्रमाणों द्वारा इस्लाम का ज्ञान

यह ज्ञान, केवल एकमात्र भगवान जो अल्लाह है उसके हवाले अपने आपको कर देना, उसके आदेशों का पालन करना और उसके बनाये हुए नियम को न मानना बहुदेववाद और बहुदेवादी है, पर आधारित है।

यह ज्ञान तीन श्रेणियों में विभाजित है :

(अ) इस्लाम (झुक जाना)

(ब) ईमान (विश्वास)

(स) एहसान (परोपकार)

प्रथम श्रेणी : इस्लाम

इस्लाम के पाँच स्तम्भ हैं :-

१. गवाही देना कि "अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजने योग्य नहीं और मुहम्मद (स॰अ॰व॰) उसके रसूल हैं।"

२. नमाज़ पढ़ना।

३. ज़कात देना।

४. रमज़ान के रोज़े रखना।

५. पवित्र मकान (काबा) के दर्शन के लिए तीर्थयात्रा करना।

अल्लाह तआला के कथन द्वारा गवाही देने का प्रमाण।

"अल्लाह ने स्वयं इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई ईश नहीं है और फरिश्ते एवं सभी ज्ञानी व्यक्ति भी इस सच्चाई और न्याय के साथ इस पर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझवाले के

सिवा वास्तव में कोई ईश नही है।`` (३:१८) और इसका अर्थ यह हुआ कि केवल अल्लाह अकेला ही पूजने योग्य है, 'नही है ईश` सभी उन ईश को नकारना है, जो अल्लाह के अतिरिक्त हैं। 'सिवाय अल्लाह के` का स्वीकार करना एक सकारात्मक रूप से अल्लाह जिसका कोई साझी नही कि उपासना (इबादत) है। फिर उसके अधिकार क्षेत्र में कौन उसका साझी हो सकता है। अल्लाह तआला का कथन इस विषय पर और प्रकाश डालता है, "याद करो वह समय इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा था कि `` तुम जिनकी बन्दगी करते हो, मेरा उनसे कोई सम्बन्ध नही। मेरा सम्बन्ध तो केवल उससे है, जिसने मुझे पैदा किया, वही मुझे राह दिखायेगा। और इब्राहीम यह शब्द अपने पीछे अपनी औलाद में छोड गया ताकि वे उसकी तरफ रूजू करें। (४३:२६-२८)

और अल्लाह तआला का यह भी फरमान है :

" कहो। ऐ किताब वालों, आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है। यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें, उसके

साथ किसी को साझी न ठहरायें, और हममें से कोई अल्लाह के सिवा किसी को प्रभु न बना ले। इस आमंत्रण को स्वीकार करने से अगर वे मुहं मोड़ें तो साफ कह दो कि गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (केवल अल्लाह की इबादत और आज्ञापालन करने वाले) हैं। " (३:६४) अल्लाह तआला के कथन से मुहम्मद स॰अ॰व॰ को अल्लाह के रसूल होने का प्रमाण।

" देखो। तुम लोगों के पास एक रसूल आया है, जो स्वयं तुम ही में से है, तुम्हारा नुकसान में पड़ना उनके लिए असहाय है, तुम्हारी सफलता की ही वह लालसा रखता है, ईमानवालों के लिए वह ममतामय और दयाशील है।" (९:१२८) अर्थात गवाही देना कि मुहम्मद (स॰अ॰व॰) अल्लाह के रसूल हैं का अर्थ है कि जिस प्रकार का आदेश दें उनका पालन करना एवं जो कुछ भी कहें उस पर विश्वास करना, उन चीज़ों से बचना जिनको मना करें और उन्हीं के भाँति अल्लाह की इबादत करना।

नमाज़, ज़कात और अल्लाह के एक होने के प्रमाण कुरआन में अल्लाह तआला के कथन से :

" और उनको इसके अतिरिक्त कोई आदेश नहीं दिया

गया था कि अल्लाह की इबादत करें, अपने दीन (धर्म) को उसके लिए शुद्ध (खालिस) करके, बिल्कुल एकाग्र होकर, और नमाज़ क़ायम (स्थापित) करें और ज़कात दें। यही अत्यन्त सही और दुरूस्त दीन (धर्म) है।" (१८:५)

अल्लाह तआ़ला के फ़रमान से रोज़े का प्रमाण :
"हे ईमान वालों! तुम्हारे लिए रोज़े (व्रत) अनिवार्य कर दिए गये। जिस प्रकार तुसे पहले नबियों के अनुयायिओं के लिए अनिवार्य किए गये थे। इससे आशा है कि तुममें धर्म परायणता का गुण पैदा होगा।"(२:१८३)

अल्लाह तआ़ला कुरआन में हज के लिए फरमाता है :
"लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जिसको इस घर तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इसका हज करे, और जो कोई इस आदेश के अनुपालन से इन्कार करे तो उसे मालूम हो जाना चाहिए कि अल्लाह तआ़ला संसार के सारे लोगों से बेपरवाह है।" (३५:९७)

द्वितीय श्रेणी : ईमान (विश्वास)

ईमान की सत्तर शाखाऐं हैं, उनमें से सर्वोच्च गवाही

देना कि अल्लाह के सिवाय कोई पूजने योग्य नही , और निम्न रास्ते में पड़ी हुई किसी चीज़ को हटा देना ,और शर्म ईमान की एक शाखा है।

ईमान के छः स्तम्भ

विश्वास करना १. अल्लाह पर , २. उसके फरिश्तों पर , ३. उसकी अवतरित किताबों पर , ४. उसके रसूलों पर , ५. क़यामत के दिन के हिसाब पर, और ६.अच्छे-बुरे भाग्य पर ये छः स्तम्भ पर ईमान लाने का प्रमाणित अल्लाह का कथन :

" नेकी यह नही है कि तुमने चेहरे पूर्व या पश्चिम कि ओर कर लिए , बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को, और अन्तिम दिन को और फरिश्तों को, और अल्लाह की अवतरित की हुई किताबों को और उसके सन्देश- वाहको (रसूलों) को दिल से मानें और अल्लाह के प्रेम में अपना मनभाता धन नातेदारों , और अनाथों और गुलामों की रिहाई पर खर्च करें , उपासना (नमाज़) का आयोजन करे और दान दे। और नेक लोग वे हैं , जो वचन दें तो उसे पूरा करें , और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य और असत्य के

युद्ध में धैर्य दिखायें। ये हैं सच्चे लोग और यही लोग सुचिन्तित हैं।" (२:१७७)

अल्लाह के कथन से भाग्य का प्रमाण :

हमने हर चीज़ एक भाग्य के साथ पैदा की है "(५४:४९)

तृतीय श्रेणी : परोपकार (एहसान)

एहसान का केवल एक स्तम्भ है , " और वह यह है कि अल्लाह की इबादत इस प्रकार करो जैसे वह तुम्हें देख रहा है , और अगर न हो सके तो सोचो कि वह तुम्हें देख रहा है। "

और प्रमाण के लिए अल्लाह तआला का कथन है , " अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो उससे डरते हैं और उत्तम कार्य करने वालें हैं। "(१६:१२८)

और अल्लाह तआला का यह भी कहना है ,

" और उस प्रभुत्वशाली एवं दयावान पर भरोसा करो , जो तुम्हें उस समय देख रहा होता है , जब तुम उठते हो और सजदा करने वालों लोगों में तुम्हारी गतिविधि पर निगाह रखता है। वह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है। "(२६:२१७-२२०)

और अल्ला तआ़ला यह भी फरमाता है ,
" (हे नबी) , और तुम जिस दशा में होते है और कुरआन में से जो कुछ भी सुनाते हो, और लोगों , तुम भी जो कुछ करते हो उस सबके बीच में हम तुमको देखते रहते हैं।" (१०:६१)

जिब्रील (अ॰स॰) की बहुत मशहूर हदीस से दलील , " उमर बिन खत्ताब (रज़ि अल्लाह अनहु) ने बताया " एक दिन हम लोग नबी (स॰अ॰व॰) के चारों ओर बैठे हुए थे कि एक बहुत ही खूबसूरत व्यक्ति आया जिसके बाल बहुत काले थे, उसके चेहरे से यात्रा की कोई थकान भी नहीं लग रही थी, और हम जो लोग वहाँ बैठे थे , एक भी व्यक्ति उनको नहीं जानता था और वह नबी (स॰अ॰व॰) के सामने इस प्रकार बैठा कि उसके घुटने नबी (स॰अ॰व॰) के घुटने से मिले हुए थे और उसके हाथ नबी (स॰अ॰व॰) के जाँघों पर क्रमशः रखे हुए थे। उसके बाद उसने कहा , "ऐ मुहम्मद , मुझे इस्लाम के बारे में बताओ ? " आप ने उत्तर दिया , "गवाही देना की अल्लाह के सिवाय कोई उपासना के योग्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं , नमाज़ पढ़ना , ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना ,

यदि सामर्थ्य हो तो हज करना। " उसने कहा, "तुमने सच कहा।" हम लोगों को आश्चर्य हुआ कि फिर उसने क्यों नबी (स॰अ॰व॰) से पूछा और जब उनके कहे को सच कह रहा है। तब उसने फिर पूछा, "हमें ईमान के बारे में बताओ।" नबी (स॰अ॰व॰) ने उत्तर दिया, " अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, और अन्तिम दिन पर, और अच्छे-बुरे भाग्य पर विश्वास करना।" उसने कहा, "एहसान के बारे में बताओ?" नबी (स॰अ॰व॰) ने उत्तर दिया, "अल्लाह की इबादत इस प्रकार करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो, अगर यह कि तुम उसे नहीं देख रहे हो, तो वह तुम्हें देख रहा है।" उसने फिर पूछा, "मुझे प्रलय के दिन के बारे में बताओ?" नबी (स॰अ॰व॰) ने उत्तर दिया कि वह प्रश्न पूछे जाने वाले की अपेक्षा अधिक जानता है। लेकिन जब उसने उसकी निशानियों के बारे में पूछा तो नबी (स॰अ॰व॰) ने उत्तर दिया, "यह है कि गुलाम लड़की अपनी मालिकिन को जन्म देगी और तुम देखोगें कि नंगे पैर और फटे कपड़े पहनने वाले गड़िरिये (बद्दू) ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने में एक-दूसरे का मुकाबला करेंगे।"

जब अजनबी चला गया , तो नबी (स०अ०व०) कुछ क्षण चुप रहे और फिर कहा , " ऐ उमर ! क्या तुम प्रश्न पूछने वाले को पहचान सके ? " हम सभी ने उत्तर दिया , " अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। " तब नबी (स०अ०व०) ने बताया , " यह जिब्रील थे , वह तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने आये थे। "

तीसरा मूलाधार

अपने नबी मुहम्मद (स०अ०व०) के बारे में ज्ञान

वह मुहम्मद (स०अ०व०) पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल मुत्तलिब पुत्र हाशिम , हाशिम कुरैश कबीले से, कुरैश अरब कबीले से , अरब हज़रत इस्माईल पुत्र इब्राहीम अल खलील के वंश में हैं उन पर बहुत दरूद और सलाम हो। उन्होंने तिरसठ वर्ष की आयु पायी। जिसमें चालीस साल नबूवत मिलने से पहले और तेईस वर्ष नबी और रसूल रहे।

नबी तब हुए जब सूरः इक़रा (संख्या ९६) अवतरित हुई और रसूल तब हुए जब सूरः मुद्दस्सिर (संख्या ७४) अवतरित हुई। आपका शहर मक्का था।

अल्लाह ने उन्हें शिर्क को समाप्त करने और तौहीद

का सन्देश देने के लिए भेजा था। इसकी दलील में अल्लाह तआला का कथन कुरआन में इस प्रकार है, " हे, ओढ़ लपेट कर लेटने वाले, उठो और सावधान करो। और अपने प्रभु की प्रशंसा की घोषणा करो। और अपने कपड़े स्वच्छ रखो। और गन्दगी से दूर रहो। और अधिक प्राप्त करने का प्रयत्न करो। और प्रभु के लिए धैर्य से काम लो।"

" उठो और सावधान करो " का अर्थ है कि अल्लाह के एक होने का घोषणा करो और बहुदेववादियों को उनके विश्वास से सावधान करो।" और अपने प्रभु की प्रशंसा की घोषणा करो।" एक प्रभु की विशेषता को बताओ।

" अपने कपड़े स्वच्छ रखो " का अर्थ है कि अपने कर्म शिर्क (बहुदेववाद) के किसी भी प्रकार धब्बा आने से स्वच्छ रखो।

" गन्दगी से दूर रहो, " का अर्थ है मूर्ति और मूर्तिपूजक से दूर रहो और उनको मत स्वीकार करो।

वह अल्लाह के ओर दावत दस साल तक देते रहे। उसके बाद वह स्वर्गलोक की तरफ बुलाये गये, वहाँ पर पाँच वक्त की नमाज़ अनिवार्य हुई। तीन वर्ष तक

आपने मक्का में नमाज़ जारी रखी। और उसके बाद आप मदीना मुनव्वर: हिजरत (चले) कर गये। और " हिजरत" का अर्थ है कि मुशरिकों (बहुदेववादी या मूर्तिपूजकों) के बीच से मुस्लिम समुदाय की ओर चला जाना। और यह हिजरत क़यामत तक बाक़ी रहेगी।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला के फ़रमान से :

" और जो लोग अपने-आप पर अत्याचार कर रहे थे, उनकी आत्माओं को फरिश्ते ने खींचा तो उनसे पूछा कि यह तुम किस दशा में रहे हो ? उन्होंने उत्तर दिया कि हम धरती में निर्बल और बेबस थे। फरिश्तों ने कहा, क्या अल्लाह की धरती विस्तृत न थी कि तुम उसमें घरबार छोड़कर कहीं चले जाते ? ये वे लोग हैं, जिनका ठिकाना नरक है। और वह बड़ा ही बुरा ठिकाना है। हाँ, जो पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे वास्तव में बेबस हैं और निकलने का कोई मार्ग और साधन नहीं पाते, बहुत सम्भव है कि अल्लाह उन्हें क्षमा कर दे, अल्लाह बख़शने वाला और बड़ा क्षमाशील है।" (४:९७-९९)

और अल्लाह तआला फ़रमाता है :

" हे मेरे बन्दों जो ईमान लाए हो, मेरी धरती विशाल

है। अत: तुम मेरी ही इबादत करो। "

अल-बगवी के अनुसार प्रस्तुत अवतारित आयत (कुरआन का वाक्य) उन मुसलमानों को इंगित (इशारा) करती है, जो अभी भी मक्का में थे, और मदीना की ओर हिजरत नही की थी। (बद्र के युद्ध के समय) अल्लाह तआला ने ऐ ईमान वालों के नाम से पुकारा था।

हिजरत की सुन्नत से दलील : रसूल अल्लाह (स॰अ॰व॰) ने फरमाया, " हिजरत तब तक खत्म न होगी , जब तक सूर्योदय पश्चिम से न हो। " (सूर्योदय पश्चिम से होने का चिन्ह प्रलय का है।)

मदीना निवास में ही नबी (स॰अ॰व॰) को इस्लाम के दूसरे एहकाम (निर्देश) अनिवार्य किये गये। जैसे ज़कात, रमज़ान के रोज़े, हज, अज़ान और जिहाद, एवं अच्छे कर्म करने के लिए प्रोत्साहित करना और बुरे काम से रोकना आदि ।

यह काम दस वर्ष तक आप (स॰अ॰व॰) ने किया। उसके बाद आप (स॰अ॰व॰) का देहान्त हो गया, लेकिन उनका धर्म आज भी तमाम समुदाय का मार्गदर्शन कर रहा है, आपने सभी अच्छाइयाँ लोगों

को बताए और सभी तरह की बुराईयों से सावधान कर दिया। अच्छे कर्म जिसके ओर आपने लोगों को आमन्त्रित किया वह एकेश्वरवाद का विश्वास और कोई भी कर्म जिससे अल्लाह प्रसन्न और संतुष्ट हो, और बुरा कर्म, बहुदेववाद (शिर्क) और हर वह बात जो अल्लाह को नापसन्द हो उससे मना किया है।

अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूल अल्लाह (स॰अ॰व॰) को सभी लोगों और देशों के लिए भेजा था और उसने (अल्लाह ने) आदेश दिया कि सभी आदमी और जिन्न उनके संदेश को सुनें और उनके आज्ञाकारी बनें। और इसकी दलील के लिए अल्लाह तआला का कहना है, "कहो, ऐ लोगों! मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ।" (७:१५८)

इसके साथ अल्लाह ने इस धर्म को परिपूर्ण कर दिया। और इसकी दलील में अल्लाह ही का कथन : "आज मैंने तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए परिपूर्ण कर दिया है और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे धर्म के रूप स्वीकार कर लिया है।" (५:३)

रसूल (स॰अ॰व॰) की मृत्यु की दलील में अल्लाह

तआला का कथन :

"(हे नबी) तुम्हें भी मरना है और इन लोगों को भी मरना है। अन्ततः पुनरूज्जीवन के दिन तुम सब अपने प्रभु के समक्ष अपना - अपना मुकदमा पेश करोगे।: (३१:३० और ३१) और जब कोई व्यक्ति मरेगा, तो उसको पुनरूज्जीवन मिलेगा। इसका प्रमाण अल्लाह तआला के कथन से :

" इसी धरती से तुम्हें पैदा किया है, इसी में तुम्हें वापस लायेंगे और इसी से तुम्हें पुनः निकालेंगे।"(२०:५५)

उसका और भी कहना है :

"और धरती से तुमको अद्भुत रूप से उगाया, फिर वह तुम्हें इसी धरती में वापस ले जायेगा और इससे सहसा तुमको निकाल खड़ा करेगा।" (७१:१७ और १८)

जब उनको उठाया जायेगा तो उनका हिसाब-किताब अल्लाह के सामने पेश किया जायेगा। उनके कर्मों के अनुसार उन्हें इनाम और दण्ड मिलेगा।

और इसकी दलील में अल्लाह तआला का कथन इस प्रकार कुरआन करीम में है :

" और अल्लाह ही धरती और आकाशों की हर चीज़ का मालिक है , अल्लाह बुराई करने वालों को उनके कर्मों का बदला देता है और उन लोगों को अच्छा प्रतिदान प्रदान करता है , जिन्होंने अच्छी नीति अपनायी।" (५३:३१)

कोई भी व्यक्ति जो पुनः उठाने को नही मानता है , वह काफ़िर है। इसकी दलील में अल्लाह तआला का कथन है :

" इनकार करने वाले ने बड़े दावे से कहा कि वे मरने के पश्चात कदापि दोबारा न उठाये जाएंगे। उनसे कहो , " नही , मेरे प्रभु की सौगन्ध तुम अवश्य उठाये जाओगे , फिर अवश्य तुम्हें बताया जाएगा कि तुमने (दुनियाँ में) क्या कुछ किया है , और ऐसा करना अल्लाह के लिए बहुत आसान है " (६४:७)

अल्लाह ने सभी रसूलों को शुभ सन्देश देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा।

और उसकी दलील में अल्लाह तआला का कथन :
" ये सारे रसूल शुभ समाचार देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजे गये थे ताकि उनको भेजे देने के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुकाबले में तर्क न रहे।

"(४:१६५)

और उनमें हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पहले और मुहम्मद रसूल अल्लाह (स॰अ॰व॰) आखिरी रसूल हैं।

इसकी दलील कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पहले नबी है, अल्लाह तआला के कथन से :

"हे नबी! हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार प्रकाशना भेजी है जिस प्रकार नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों की ओर भेजी थी।" (४:१६३)

और अल्लाह तआला का कथन :

"हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सूचित कर दिया कि "अल्लाह की इबादत करो, और बढ़े हुए अवज्ञाकारी (मूर्तिपूजा) की इबादत से बचो।"(१६:३६)

अल्लाह तआला ने प्रत्येक व्यक्ति पर यह अनिवार्य कर दिया कि वह अल्लाह के अतिरिक्त की पूजा से बचे और अल्लाह पर ईमान लाये।

इब्ने क़ाय्यिम रहमहुअल्लाह के अनुसार अवज्ञाकारिता का अर्थ है कि किसी वस्तु अथवा मुर्ति पर विश्वास कर के व्यक्ति अपनी सीमा से बाहर चला जाए, चाहे वह चीज़ उपासानय या आज्ञाकारक या

कुछ और हो और अवज्ञाकारी कई प्रकार के होते है, लेकिन उनमें मुख्य पाँच हैं :-

१- शैतान इब्लीस - अल्लाह की फिटकार हो उस पर।

२- जो कोई पूजा जाये और उस पूजा को माने।

३- जो कोई अपनी पूजा के लिए लोगों को आमन्त्रित करे।

४- जो कोई अर्न्तयामी होने का दावा करे।

५- जो कोई अल्लाह के अवतरित नियमों के अतिरिक्त नियम बनाकर राज करे और न्याय करे।

इसकी दलील में अल्लाह का कथन:

" धर्म के विषय में कोई जोर ज़बरदस्ती नहीं है। सही बात ग़लत विचारों से छाँटकर अलग कर दी गयी है। अब जिस किसी ने बढ़े हुए फसादी (तागूत) का इन्कार करके अल्लाह को माना, उसने एक मज़बूत सहारा थाम लिया, जो कभी टूटने वाला नहीं, अल्लाह (जिसका साहारा उसने लिया है) सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।: २:२५६

الأصول الثلاثة

باللغة الهندية

هذا الكتاب يحتوي على:

----

* معرفة الرب سبحانه وتعالى.
* معرفة الدين.
* معرفة الرسول صلى الله عليه وسلم.
* القواعد الأربع - العلم - العمل - الدعوة - الصبر.
* أركان الإيمان والإسلام والإحسان.
* النهي عن عبادة الطواغيت.

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات في منطقة البطحاء

تحت إشـــراف
وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

ص.ب: ٢٠٨٢٤ الرياض ١١٤٦٥
هاتف: ٤٠٣٠٢٥١
٤٠٣٠١٤٢
٤٠٣٤٥١٧ — ١- ٩٦٦٠٠
٤٠٣١٥٨٧
فاكس: ٤٠٥٩٣٨٧

هاتف وفاكس صالة المحاضرات بالبطحاء
٤٠٨٣٤٠٥ - ١- ٩٦٦٠٠

حقوق الطبع محفوظة للمكتب

لا يسمح بطبع أي جزء من هذا الكتاب إلا بعد موافقة خطية مسبقة من المكتب

الأصول الثلاثة

باللغة الهندية

تاليف

شيخ الاسلام محمد بن سليمان التميمي
رحمه الله

ترجمة

سيد زاهد علي

مراجعة وتصحيح

محمد طاهر محمد حنيف